Rohtas Mahila College, Sasaram. 30.07.20
Dr. Aman Nusrat, Dept of psychology, B.A. Part II H, Pr-I
2019.20

(Topic- चिंतन के सिद्धान्त- Theories of Thinking)

चिंतन का प्रारंभ एक समस्या से होता है और इसका अंत समस्या समाधान के साथ हो जाता है। इस बात को सभी मनोवैज्ञानिक स्वीकार करते हैं। इसको लेकर मनोवैज्ञानिकों में कोई विवाद नहीं है। लेकिन समस्या के उत्पन्न होने और उसके समाधान के बीच होने वाली मध्यवर्ती प्रक्रियाओं के सम्बंध में मनोवैज्ञानिकों के बीच विवाद रहा है। इस सम्बंध में दो प्रकार के सिद्धान्त हैं, जिन्हें केन्द्रीय सिद्धान्त (central theory) तथा केन्द्रीय परिधीय सिद्धान्त या गति सिद्धान्त (motor theory) कहते हैं।

1. (केन्द्रीय सिद्धान्त central theory)

चिंतन का यह पहला प्राचीन सिद्धान्त है। यह सिद्धांत मस्तिष्क (Brain) को चिंतन का आधार मानता है। इसके अनुसार कार्टेक्स (cortex) की क्रियाओं से ही समस्या का समाधान संभव होता है। यह सिद्धान्त चिंतन में अन्य शारीरिक क्रियाओं को स्वीकार नहीं करता है।

केन्द्रीय सिद्धान्त के अनुसार किसी उत्तेजना से ग्राहक (Receptor) के उत्तेजित होने पर स्नायु प्रवाह उत्पन्न होता है, जो संवेदी स्नायु द्वारा कॉर्टेक्स में जाता है। कॉर्टेक्स में स्नायु प्रवाह के पहुँचने पर आंतरिक क्रियाएँ होती हैं। कॉर्टेक्स का साहचर्य क्षेत्र सक्रिय बन जाता है। इसी क्रम में प्राणी को समस्या का कोई समाधान सूझ जाता है और वह मानसिक स्तर पर ही कोई व्यवहार के लिए तत्पर हो जाता है।

Scanned with CamScanner

Date:....../....../......

इससे क्रियात्मक स्नायु प्रवाह उत्पन्न होकर कर्मेंद्रिय में जाता है, जिससे प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। इस प्रकार, केन्द्रीय सिद्धान्त के अनुसार समस्या तथा उसके समाधान के बीच होने वाली क्रिया मस्तिष्क के भीतर ही होती है।

मूल्यांकन (Evaluation) - केन्द्रीय सिद्धान्त के गुण -
चिंतन या समस्या समाधान के केन्द्रीय सिद्धान्त में कुछ गुणों का संकेत मिलता है।

1. चिंतन के सिद्धान्त के रूप में केन्द्रीय सिद्धान्त को अग्रता (Priority) प्राप्त है। चिंतन का यह प्रथम सिद्धांत है, जिसका उद्भव संरचनावाद के कोख से हुआ और जिसका विकास गेस्टाल्टवाद की गोद में हुआ।
2. इस सिद्धान्त से प्रभावित होकर परिधीय सिद्धान्त का विकास हुआ। संरचनावाद तथा गेस्टाल्टवाद के केन्द्रीय दृष्टिकोण के विरोध में टिचिनर जेम्स तथा वाटसन ने परिधीय सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। अतः अप्रत्यक्ष रूप से केन्द्रीय सिद्धान्त ने परिधीय सिद्धान्त के उद्भव में अन्तःप्रेरणा का काम किया।
3. अमूर्त चिंतन की व्याख्या करने में यह सिद्धान्त अधिक सफल है। विनाके (Vinacke, 1952) के अनुसार अमूर्त चिंतन की व्याख्या करने में यह सिद्धान्त परिधीय सिद्धान्त की अपेक्षा अधिक सफल है।
4. यह सिद्धान्त (central mechanism) को चिंतन का आधार मानता है जो बहुत अंशों में सही प्रतीत होता है। चिंतन को अव्यक्त क्रिया मान लेने पर भी केन्द्रीय संरचना के महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

5. इस सिद्धान्त से इस बात की व्याख्या हो जाती है कि भाषा के अभाव में चिंतन क्यों होता है। डिकसन (Dickson, 1969) ने कहा है कि मानव चिंतन की व्याख्या करने में यह सिद्धान्त अधिक अधिक सफल है।

दोष (Demerits) केन्द्रीय सिद्धान्त के निम्नलिखित दोष या अवगुण हैं।—

(i) इस सिद्धान्त का एक गंभीर दोष यह है कि चिंतन में यह परिधीय क्रियाओं के महत्व को स्वीकार नहीं करता है

(ii) इस सिद्धान्त के अनुसार चिंतन के लिए भाषा आवश्यक नहीं है। भाषा के अभाव में भी चिंतन की क्रिया संभव है

(iii) केन्द्रीय सिद्धान्त का प्रयोगात्मक आधार बहुत कमजोर है। इसकी अभिधारणाओं के समर्थन में प्रयोगात्मक प्रमाणों का काफी अभाव है

(iv) केन्द्रीय सिद्धान्त के आधार पर मूर्त चिंतन की व्याख्या काफी कठिन है। विनाके (1952) के अनुसार यह सिद्धान्त अमूर्त चिंतन की व्याख्या करने में जितना सफल है, उतना मूर्त चिंतन की व्याख्या करने में सफल नहीं है।

(v) जेकोबसन (Jacobson, 1929), मैक्स 1934, (शॉ) 1940, थोरसन (Thorsen, 1969) आदि के अध्ययनों से केन्द्रीय सिद्धान्त खण्डित हो जाता है

Scanned with CamScanner